हृदय ज्ञान
कब स्वर्ग पृथ्वी पर आया
Email : info@wisdomfortheheart.in | Web : www.wisdomfortheheart.in

एक मुरझाता तारा

यूहन्ना - ३:२२-३६

परिचय

अगर यह मुमकिन होता तो कि हम समय मे दुबारा वापस जा सकते तो मै कई और जगह और कार्यक्रमों में जाना चाहता, साथ ही बल्डी मेरी के महल में । यह एक रानी थी जिसने सबसे ज्यादा हिंसात्मक काम किस थे स्कोटलेन्ड के ईसाईयों के प्रति । मैं उसके कोर्टरूम में जाना चाहता हूँ, उसको देखने के लिए नहीं परन्तु प्रचारक को सुनने जिसका नाम जॉन नोक्स (John Knox) था, उसने सच्चाई को बताया, जबकि यह उसको उसकी जान की कीमत चुकानी पडी सकती थी ।

एक अवसर पर जब नोक्स रानी के चेपल में वचन प्रचार करने जा रहे थे, उन्हे उनकी मुलाकत स्थागित करने के लिए कहा गया क्योंकि वह बहुत ही खतरनाक स्वाभाव में थी । नोक्स आगे अपने रास्ते चलते गए यह कहते हुए, मैं क्यो रात्री से डरू, जबकि मैने अभी ही अपना समय परमेश्वर के समने घुटनो पर बिताया है ?

मैं जर्मनी में जाना चाहता हूँ साल १५२१ (पन्द्रह सौ इक्किस) के समय में, जब कोर्टरूम खचाखच भरा था जब मार्टिन लूथर एक सुधाक, परिक्षण के लिए खडे थे एक प्रमाणिक के रूप में । मुझे बहुत खुशी होती उनके वहाँ पहले शब्दो को सुनकर, क्योंकि उनको आज का सबसे ऊँचा और शक्तिशाली धार्मिक और राज नितीक नेता कहा जाता है । वह यह बोले - "मेरा विवेक परमेश्वर के वचन द्वारा बन्दी है । मैं कुछ भी नहीं कर सकता और मैं नही फिरूँगा, मैं यहाँ खडा हूँ । यही है जो मैं कर सकता हूँ । मैं फिर से समय में वापस जाना चाहूँगा और हग लाटीमर (Hugh Latimer) को प्रचार करता सुनना चाहूँगा । वह एक सुधारक था जिसने प्रोटस्टन्ट धर्मसुधार किए डग्लैंड में जब तक वह शहीद हो नहीं गए । एक वचन जो उन्होने प्रचार किया उसने हेनरी आठ (Henry VIII) का अप्रसन्न किया, जिन्होंने कहा की वह दुबारा प्रचार करे और समाज मे माफी माँगे, परन्तु उन्होने लाटीमर मना कर दिया । वह हग लाटीमर (हयूग) (Hugh Latimer) थे जिन्होंने कुछ प्रसिद्ध लाइने बोली थी जिसने एक आग लगा थी नए प्रोटेस्टेन्ट चर्चो में । उन्हें जला दिया जाने वाला था केवल इसलिए क्योंकि वह प्रोटेस्टेन्ट धर्म सुधार का हिस्सा थे । उन्होंने शमुएल रिडलै (Samuel Ridley) से जो कि आग में जल कर मरने वाला हो सकता था कहा "हृदय रखो, कि हम आज के दिन इग्लैंड में ऐसी मोमबत्ती जलाएगें जो मेरी आशा से कभी भी बन्द नहीं होगी ।" मैं ऐसे समय भी वापस जाना चाहता हूँ । जिसे आसानी से सुधार का समय कहा जा सकता है । एक अग्निमय प्रचारक अचानक आता है बिना किसी चेतावनी के और एक ऐसा सन्देश देता है जो सारे आत्मिक और राजनीतिक नेताओ को झटका दे देता है । यह उनके धार्मिक भाव के अपमानजनक था । इस गइगड़ते प्रचारक ने राजा को भी अप्रसन्न किया अपने संदेश से जो की नैतिक सफाई या पवित्रता पर था । उस के समय मे राजा का नाम हेनरी नहीं हेरोद था ।

अब मैं जिस समय में जाना चाहूँगा वह यूहन्ना का जंगल में रहने वाला समय नहीं है, परन्तु वह समय है जब कि बहुत ही अलग कार्य हुआ । मै यह देखना चाहता जब यूहन्ना के चेलो उसके पास आकर यह बताते की यीशु मसीह का प्रचारकात शुरूआत हो गई और उससे ज्यादा लोगों का प्रभवित कर रही है ।

जब हम यहाँ पर नही हो सकते है, परन्तु हम उनकी बातो को पढ तो सकते है । और यह बातचीत सही मे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की महानता को प्रकट करती । यह पाया जाता है यूहन्ना के सुसमाचार के वचन तीन के शुरूआती बाईस वचन मे

इसके बाद यीशु और उसके चेले यहूदिया देश में आए, और वह वहा उन के साथ रहकर बपतिस्मा देने लगा अब अध्याय चार (४) का वचन दो (२) यद्यपि यीशु स्वंय नही वरन् उसके चेले बपतिस्मा देते थे ।

यह बपतिस्मा यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले बपितस्मा की तरह था । यह बपतिस्मा पश्चाताप का था जो लोगो को पहचानता था सच्चाई के साथ नबी की शिक्षा के द्वारा । यह एक विश्वासी का बपतिस्मा नही था, जैसे की हम आज जानते है, परन्तु वहाँ पर कुछ समानांतर थे । हमने पहले देखा की अध्याय तीन (३) के तेयीस (२३) मे लेकर पच्चीस (२५) तक यूहन्ना भी शलेम के निकट ऐनोन मे बपतिस्मा देता था, क्योंकि वहाँ बहुत जल था, और लोग आकर बपतिस्मा लेते थे । यूहन्ना उस समय तक जल खाने में नही डाला गया था ।

वह वहाँ डाला गया क्योंकि उसने हेरोद की मलकिन को अपने प्रचार जो श्रद्धाहीनता पर था से अप्रसन्न किया था । वहाँ यूहन्ना के चेलों का किसी यहूदी के साथ शुद्धि के विय में वाद विवाद हुआ ।

अब हमें यह नही पता यह विवाद कैसे समबन्धित है, परन्तु कुछ समय इस चर्चा के दौरान, यह झगडालू जिसका नाम नही दिया है यहूदी इस बात को उठाता है न केवल यूहन्ना के बपतिस्मा दे रहे है बल्कि यीशु के चेले भी बपतिस्मा दे रहे है । एक मिनट रूकिए आपने क्या कहा ? यीशु यहूदिया मे बपतिस्मा दे रहा है ? यह यूहन्ना की जगह है और यह यूहन्ना का बपतिस्मा है ।

अब वचन २६ (छब्बीस) को देखिए ।

और उन्होंने यूहन्ना के पास आकर उससे कहा, 'हे रब्बी,जो व्यक्ति यरदन के पार तेरे साथ था, और जिस की तूने गवाही दी है, देख वह बपतिस्मा देता है, और सब उसके पास आते है, यही वही क्षण था जिसे मैं देखना चाहता था, क्योंकि यह समय यूहन्ना की महानता को दर्शाता । वह कैसे इसे उसका जवाब देता ?

चलिए, मैं आपको बताता हूँ, कि उसने विनम्रता से उत्तर दिया । यहाँ पर मैं यूहन्ना के कुछ शब्द उठना चाहता हूँ और कुछ बहुत ही सुन्दर बातों को उजागर करना चाहता हूँ विनम्रता के विषय में जो हम सभी को चुनौती देती है परमेश्वर के संदेशवाहक के रूप में ।

विशेषता (१)

विनम्रता अपने निजी उपल्बधियों को नही बढ़ाई देता ।

१. पहली विशे ता है कि विनम्र होने कि, जो यूहन्ना दर्शता है वह है कि वह अपनी खुद की उपल्बधियों को नकार देता है । अगर वचन सत्ताईस (२७) में देखे तो यूहन्ना के निम्न उत्तर को जो उसने चेलों को दिए पाँएगे यूहन्ना ने उत्तर दिया, ''जब तक मनुष्य को स्वर्ग न दिया जाए, तब तक वह कुछ भी नही पा सकता ।

दूसरे शब्दों में, ''क्या मनगंडत है ? मेरी मिनिस्ट्री परमेश्वर के पास से है । मैं उस से ज्यादा कुछ नहीं हूँ जो परमेश्वर ने मुझे बनाया है । हन दुर्भग्य से वाकिफ होगे जनवारों के ससांर के - भेडे जो झुड में रहती है उनके पास सिर भिडने का काम होता है, और जिानवर सिर सबसे ज्यादा मजबूत होता है, वह जीतता है, मुर्गी के घर में, चोच लडाना होता है । हमारे इसाई समुदाय में हमे कुछ महत्वपूर्ण और क्षमता हैं नही बताते यह देखकर की किसकी सिर सबसे मजूबत है या फिर किस की चोंच सबसे पैनी, हमारे पास क्रमांक है । जिससे हम तुलना करते है ।

हम तुलना करते है बैंक की किताब की, प्रतिभा की, उपाधि की, रूप की कार की, घर की व्यवसाय के शीर्षक की आदि की । ताकि हमे किसी श्रेणी पर आ सके । और मिनिस्ट्री में, हम तुलना करते है बजट की और उपस्थिती लेख प्रमाण की । जबकि, यूहन्ना के चेलों की परेशानी यह नही थी लोग उसके प्रचार को सुनने नहीं आ रहे परन्तु यह थी कि वह ज्यादा लोग यीशु के पास जा रहे ।

देखे वचन तेयीस में .... और लोग आकर बपतिस्मा लेते थे । यह यूहन्ना द्वारा था ? वहा पर तब भी भीड़ थी और वहाँ पर तब भी अद्‌भुत परिणाम थे । पर फिर से देखिए, वचन छब्बीस को ।

.... और सब उसके पास आते है ।

साक्ष्य के रूप मे, उन्होंने जासूस भेजे एक या दो ताकि वह यीशु के तम्बू मे आते लोगों को गिन सके । वह पर भीड़ लुभाने वाली थी कि उन्होंने अपनी शिकायत को बढा चढ़ाकर बोला. ''यूहन्ना सब लोग उसके पास जा रहे है ।'' एक बार फिर से यूहन्ना का उत्तर देखिए, वचन सत्ताई में - यूहन्ना ने उत्तर दिया, ''जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाए, तब तक वह कुछ या नही पा सकता ।

किसी के भी जीवन या मिनिस्ट्री का फल पहले से ही परमेश्वर द्वारा निश्चित है, और उपहार के तौर पर दिया जाता है इच्छक सेवक को । इसका मतलब यह नही है कि आप अपने इसाई जीवन में एक दम आलसी वन जाए और फिर परमेश्वर पर दो लगाए अपने कुछ न पाने पर । परमेश्वर के शासन पर विश्वास करने का यह अर्थ नही है कि हम आलसी हो सकते है, परन्तु इसका यह अर्थ है कि हमारे प्रयासों का कोई भी परीणाम हो, हम उसमें परमेश्वर का हाथ देखेंगे, और बिल्कुल भी जलन नही महसूस करेंगे दूसरे व्यक्ति से, जिसको परमेश्वर ने चुना है ज्यादा प्रभावी होने के लिए ।

जैसे की एलिजाबेथ ब्राऊनिंग लिखती है, ''सारी सेवा (सारे विभाग परमेश्वर की नजर मे एक जैसी है ।'' विश्वासियों के मध्य मे दो विभिन्न प्रकार के व्यवहार है ।

- ''मेरा अधिकार है,'' या फिर

- ''मुझे सौंपा गया है''

यीशु मसीह की देह में क्या अन्तर है यह दूसरा प्रकार बतायेगा हम जो भी है वह हम परमेश्वर के नमूने अनुसार है । हमे परमेश्वर के नमूने के अनुसार ही समझदारी और उपहार मिले है । और परमेश्वर ने हमे एक दूसरे की सफलता के लिए रखा है ।

अब मैं चाहता हूँ की आप पहले कुरिन्थियों के चौथे (४) अध्याय के वचन सात (७) को लिखे । जहाँ पर पौलुस भी वही बात को उठाता है । और ऐसा लगता है वह भी यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की बात बोल रहा है । क्योंकि तुझ से और दूसरे में क्यों भेद करता है ? और तेरे पास क्या है जो तू ने (दूसरे से) नही पाया ? और जब कि तू ने (दूसरे से) पाया है, तो ऐसा घमण्ड क्यों करता ..... और आप सोच रहे होगे की परमेश्वर ने आपको क्यों ऐसा दिया जो उसने दिया है तो पौलुस इसको बारह अध्याय के बारह वचन को में उसे बताता है ।

क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से है, और उस एक देह के सब अंग बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीह भी है ।

आइए अब पन्द्रह वचन से लेकर सत्तरह (१७) तक, जहाँ पौलुस उसका विवरण करता है । यदि पाँव कहे, ''मैं हाथ नही, इसलिए देह का नही,'' तो क्या वह इस कारण देह का नहीं ? और यदि कान कहे, ''मैं आँख नहीं इसलिये देह का नही'' ... और यदि सारी देह आँख ही होती तो सुनना कहाँ होता ? यदि सारी देह कान ही होता, तो सूघंना कहाँ होता ?

अब एक चित्र सोचिए - एक शरीर एक बड़े कान के साथ और कोई भी सूघंने की शक्ति नहीं, न ही देखने की और न ही कोई स्वाद चखने को । हो सकता था कि सुनने की शक्ति बहुत होती परन्तु दूसरे शरीर के अंगो के बिना वह चल नही सकता या फिर अगर वह चल भी सकता तो वह दूसरो में भिड़ता रहता, और वह कुछ नही खाता और अन्य तब वचन अठारह में, पौलुस अपना बिन्दु रखता है ।

परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक करके देह में रखा है ।

तो हाथ बनने की कोशिश मत किरए अगर आप पाँव है, मुँह बनना बन्द किजीए अगर आप कान है । चर्च को यह सच जानने की जरूरत है ।

एक बात जो यूहन्ना को सच में एक महान बनाता है कि वह एक समर्पित सितारा था, न की सूरज । वह समर्पित था खुद के होने मे, और परमेश्वर के दिशा में और रचना में । अब आप सोचिए अपने आप को गहरे जंगल में और अपने को कुछ जानवरों के झुंड़ पर गिरते हुए देखिए । वह सब एक सीधे लाइन मे बैठे है सामने एक ऊँचे स्वर वाला और उद्यमी खरगोश हाथ में एक कागज लिए खडा है अैर भाषण दे रहा है । वह जरूर से जिम्मेदार था सब का, पर यहाँ तक की कोई भी उसे रूक नहीं सकता था किसी चीज में । आपने ने निश्चय किया है सुनने का और आपको जल्दी पता चलता की खरगोश सभी जानवरों को गुणों की सूची दे रहा था जो की जानवरों को सच मे बेहतर बनाता है ।

आप उसे कहते सुनते है, ''अगर आप सच में अच्छे और महान जानवर बनना चाहते है, तो आप तेज भागना और छलांग मारना सिखिए ।''

वहाँ पर एक बत्तख थी भीड़ मे, जो तेज आवाज में उसका उल्लघंन करती है, ''हे तैरने और उडने के लिए क्या ? ''तैरना'' खरगोश हँसता है, ''किसको तैरनाकी जरूरत है ? और उड़ना .... सच में महान जानवर अपने पैर जमीन पर रखते है ।

तो बत्तख और जानवरों के साथ भागने और कूदने का अभ्यास करनी लगी । बेचारी बत्तख, उसे सही से नहीं आया । परन्तु जब भी वह गति पकडती, तो उसका पिछला हिस्सा इतनी तेजी से हिलता की वह पलट जाती थी । और उसे देखकर कभी नहीं लगता की वह छलांग लग रही है, जब तक वह पंख न फड़फडाए, परन्तु तब वह असल कूदना नही होगा, जैसे खरगोश करते है । तब अंत में, निराश बत्तख, वापस तलाब के पानी मे चली गई । जब वह पानी के किनारे सुन्दर तरीके से रही थी, आप उसे कहते सुन सकते है, ''मुझे लगता है, कि मैं कभी भी महान जानवर नहीं बनँऊगी ।''

हमारे श्रोताओं में भी कई उस बत्तख की तरह है । और कुछ उस खरगोश की तरह भी है ? हमारे पास कुछ चिडियाँ, कुछ चील और कुछ तितली भी है । और हमारे पास कई मुसीबत होनी अगर हम सब खरगोश की तरह दिखना चाहेंगे उसकी तरह थोड़ा भागना और कूदना चाहेंगे । परमेश्वर ने हमे जानबूझकर जनरल मोटर की तरह नहीं बनाया जा बाइकस बनाते है । हम सब के पास सारी योग्यता नही है, समझदारी नहीं है और न ही उपहार है । बल्कि, किसी और की तरह बनने का मतलब है की परमेश्वर की आप समझ को खारिज़ करते है, जिसने आपको बनाया तैयार किया, जिसने आपको अगो का जोडा है ।

तो इसके बजाए की आप कूदना सीखे, या तैरना और भागना, कोशिश करके दूसरे दो काम किजिए ।

पहली क्रिया १ - धन्यवाद करिए

१. पहली क्रिया है कि धन्यवाद किजिए परमेश्वर का धन्यवाद किजिए उसको आपको बनाने के लिए । आप एक दम असली है । आपकी भूमिका से लेकर आपकी शरीर गठन आपको तैयार किया गया अलौकिक योजना जो डीनए है । मुझे याद है एक जूनियर हाई स्कूल के लड़के रूप में, कि मैं बहुत परेशान था कि मैं बडा और शक्तिशाली नहीं था । फ्रेकी, जो सडक के छोर पर रहता था, वह पडोसी था और बहुत धमकाता था और आंतकित करता था मुझे और सारे बच्चों को । तो मैं एक केन पाउडर की लेकर आया जो पो ण स्टोर से था जिस पर एक तस्वीर थी एक पुरू की जिसकी बहुत चौड़ी बाँहे थी और उसके साथ किनारे में एक सुन्दर महिला थी । और इसकी मैं अपने जीवन में कमी महसूस कर रहा था । मेरी माँ भी मेरी साथ गई थी और मेरे लिए मिल्कशेक बनाती थी जिसमे मैं वह बुरादा मिलाता था । परन्तु मैं एक पाउन्ड भी वजन नही बढाथा ।

परेशानी यह है, कि कई लोग अनिश्चितता का पीछा कभी नही छोड़ते है । तो वह कई हजार डॉलर फेंकते है स्पोर्टस् या खेल उपकरणों, या फिर तेज कारों पर, या फिर डिजाईनर कपडों पर ताकि उन्हें मापा जाए ।

अपने अगुँठे के नमुने के देखे, यह केवल एक ही है पुरी दुनिया में । यह ऐसा है जैसा परमेश्वर हमे यह संदेश देने की कोशिश कर रहा है कि हम बहुत विशे है और सभी लोगो को अलग भी ।

क्रिया दूसरी -२ - हमेशा वास्ताविक रहिए क्रिया

२. दूसरी क्रिया है कि हमेशा वास्तविक रहिए

परमेश्वर ने एक आदर्श से काम नहीं बनाया है हमे । कोई भी बुद्धिमानता और शरीरिक रूप से आदर्श नहीं है । शायद परमेश्वर हमे यह सिखाने की कोशिश कर रहा है कि जो अन्दर है वह महत्वपूर्ण है उससे जो बाहर है । जबकि, कि आपको कभी लगा है कि बाहरी अप्रावीणता एक याद दिलाता है परमेश्वर की प्राथमिकता को ? वह आपके चरित्र के गुणो को लेकर चिन्तित है ।

अगर आप भाग सकते है या कूद सकते है तो आप इसका श्रेय नहीं ले सकते है, अगर आप तैर नही सकते हो तो आप इसका दो भी नही ले सकते हो । अगर आप केवल बत्तख की तरह चल सकते है, तो ऐसा चलिए परमेश्वर की महिमा के लिए । अगर आप उड़ या भाग या कूद या तैर सकते है तो किजीए वह जो आपको दिया गया है । और उसे बढ़ाईए, सुधारिए और उसे परमेश्वर की महिमा के लिए प्रयोग किजीए । और सबसे याद रखिए की आपको यब सब निपुण्ता आपको किसने दी है ।

मुझे ऐसा विश्वास है, कि एक दिन, हम लोग आश्चर्य में होगें देखकर उन अलग अलग लोगों को देखकर जिनको कहेगा, ''शाबाश, अच्छे और विश्वासयोग्य सेवका'' वह यह नही कहेगा,

- ''शाबाश, तुम बहतरीन सेवक ।''

- ''शाबाश, तुम पढ़े लिखे सेवक ।''

- ''शाबाश, तुम आकर्षक और अमीर सेवक ।''

- ''शाबाश, तुम कलंक रहित, आदर्श सेवक ।''

नही, परमेश्वर कहेगा, ''शाबाश, तुम विश्वासयोग्य सेवक ।'' या फिर दूसरे शब्दों मे, ''तुम विश्वासयोग्य रहे उतने में जितना मै ने तुम्हे दिया अपने नाम के लिए ।

अब आईए, यूहन्ना, अध्याय - तीन (३) मैंने आपको कुछ किनारे पीछे ले गया । आईए आगे बढते है और दूसरे विशे ताओं को देखते विनम्रता की जो यूहन्ना हमें देता है ।

दूसरी विशे ता

विनम्रता खुद की व्यक्तिगत महत्वपूर्णता को अस्वीकार कर देती है

२. दूसरी विशे ता है विनम्रता की, जो यूहन्ना दिखाता है, वह है कि विनम्रता खुद की व्यक्तिगत महत्वपूर्णता को अस्वीकार कर देती है ।

देखिए अध्याय तीन (३) वचन अठायिस (२८) ।

''तुम तो आप ही मेरे गवाह हो कि मैंने कहा, ''मैं मसीह नहीं, परन्तु उसके आगे भेजा गया हूँ ।'' अगर दूसरे शब्दों मे कहे, यूहन्ना अपने चेलों से कह रहा है, ''चलो दोस्तो, यह मत भूलो जो मैं नहीं हूँ ।'' और वह कह रहे है, ''चलो, यूहन्ना, अपने आप को छोटा मत समझो । अपने चारो ओर देखो... क्या तुम स्वर्गदूत को भूल गए ?'' वैसे लगभग हम स्वर्गदूत के वि य में भूल गए, निकालिए दूबारा, लूका पहला (१) अध्याय, वचन तेरह (१३) से लेकर सत्तरह (१७) तक ।

परन्तु स्वर्गदूत ने उससे कहा, 'हे जकर्याह, भय भीत न हो, क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गई है, और तेरी पत्नी इलीशिबा से तेरे लिए एक पुत्र उत्पन्न होगा, और तू उसका नाम यूहन्ना रखना । तुझे आनन्द और ह र्ष होगा, और बहुत लोग उसके जन्म के कारण आनन्दित होगे । क्योंकि वह महान होगा .... (यहाँ एक शब्द है - वह महान होगा)

... प्रभु के सामने, और दाखरस और मदिरा कभी न पीएगा, और अपनी माता के गर्भ ही से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो ज ाएगा, और इस्त्राएलियों में से बहुतेरों को उनके प्रभु परमेश्वर की ओर फेरेगा । वह एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ्य में हो कर उसके आगे आगे चलेगा कि पितरों का मन बाल - बच्चों की ओर फेर दे और आज्ञा न माननेवालो को धर्मियों की समझ पर लाए, और प्रभु तेरे लिए एक योग्य प्रजा तैयार करे ।''

आप यूहन्ना को भूल गए - आप महान है ।

और आपकी मिनिस्ट्री में तीन तह का असर है -

- परिवारों की पुनः स्थापन

- विद्रोही लोगों का नए सिरे से शुरूआत

- फिर से ध्यान केन्द्रित करना पूरे राज्य पर, यीशु मसीह के आने के लिए

तब यूहन्ना यह हो रहा है ।

और यूहन्ना शांति से कहता है, ''कुछ कुर्सियों को निकालो दोस्तों और आओ मैं तुम्हे दूसरा नजरिया देता हूँ । फिर से यूहन्ना के तीसरे (३) अध्याय पर आए उसके उन्तीस (२९) वचन पर ।

''जिसकी दुलहिन है, वही दूल्हा है, परन्तु दूल्हे का मित्र जो खडा हुआ उसकी सुनता है, दूल्हे के शब्द से बहुत हर्षित होता है, अब मेरा वह हर्ष पूरा हुआ है ।''

यूहन्ना के दिनों मे मध्य पूर्व में यह रूढंगत था कि दूल्हे का दोस्त (जिसे हम बेस्ट मैन कहते है) को सारे शादी के इंतजाम करने होते थे । वह उत्सव का प्रधान होता था और उस समय उसके निर्देश को सुनते और आदेशों को पालन करते थे । उसका अंतिम कार्य, जो प्राथमिक रूप से एक परंपरा है, कि उसे दुल्हन के कमरे के द्वार पर खडा होना होता था कि शादी पूरी हो जाए तो इस बात का निश्चय कर ले कि दुल्हन के पास कोई और मिलने न जाए दुल्हे को छोड़कर । तो वह द्वार पर खड़ा रहता है एक निश्चित समय पर, जब दूल्हा आता है । तब वह पीछे हट ज ाता है, और उसकी जिम्मेदारी पूरी हुई । यूहन्ना कहता है, ''कुछ समय तक लोग मुझे सुन रहे थे । पर याद रखो मैं केवल तैयार कर रहा हूँ राज्य को - जो दुल्हन है - ताकि वह दूल्हे से मिल सके - जो मसीहा है । मैं उसकी आवाज सुनता हूँ । वह जबकि यहाँ है, यह समय है कि किनारे हो जाओ खुशी के साथ

यह मुझे तीसरे की ओर ले जाता है, कह सकते है कि सबसे कठिन विशेषता विनम्रता की ।

विनम्रता व्यक्तिगत पहचान को बनाए रखने को अस्वीकार कर देती है

३. तीसरी विशे ता विनम्रता की जो यूहन्ना बताता है, वह है कि विनम्रता व्यक्तिगत पहचान को बनाए रखने को अस्वीकार कर देती है ।

वचन तीस (३०) को देखिए

''अवश्य है कि वह बढे और मैं घटूँ ।''

जिसका वास्तव में मतलब है, ''कि वह बढ़त जाए और मैं घटता जाँऊ ?''

सितारा तेज से चमकता है अन्धेरे में, परन्तु जब सूर्य की रोशनी आने लगती है क्षितिज पर, तब सितारे की रोशनी मुरझाने लगती है । वह अभी भी है, परन्तु उसके प्रतिबिम्ब की अब और जरूरत नहीं है । यूहन्ना एक मुरझाता सितारा है । यहा पर यूहन्ना को अहात होने, भूल जाने या फेंक दिये जाने का अवसर था । और यूहन्ना के चेले यह नहीं चाहते थे की उनका नेतृत्व करने वाला किसी की परछाई मे दब जाए । वह कह रहे थे, ''देखो, यूहन्ना कुछ करो उसको रोकने के लिए ।''

यह मजेदार है कि नम्र ईसाई का उलटा वह है जो अपनी दृष्टि खो देता है इस बात की, उसे क्या करना है । यह एक प्रचारक की तरह है, जो की आसमान मे उठाए लिए जाने पर प्रचार कर रहा हो, और बीच में उसके प्रचार के, यीशु मसीह बादलों पर दिखे ताकि वह चर्च को बादलों पर उठाले - और प्रचारक अप्रसन्न हो जाता है कि उसके प्रचार या संदेश मे बाधा पड़ गई । यह निगम के लोगो के लिए नौकरी ढूढंने वाले की तरह है जो अप्रसन्न है कि उसके ग्राहकों को नौकरी मिल रही है, या फिर बेकरीवाले की तरह है जिसे बुरा लग रहा है कि रोटी खाई जा रही है, या फिर उस बिल्ड़िंग बनाने वाले की तरह जा नाखुश है कि लोग उसके बनाए घर खरीद रहे है, या फिर चित्रकार की तरह जो नखुश है कि उसकी चित्रकला खरीदी जा रही है । बेवकूफ हाँ है । क्यो ? क्योंकि यही उनकी व्यवसय का लक्ष्य है ।

यहाँ पर यूहन्ना के चेले है, जिसका काम है लोगों को यीशु से परिचय करना, परन्तु नाखुश है कि लोग यीशु के पीछे चल रहे है । कभी घमण्ड चीज़ों को बेकार कर देता है । अब यीशु की मिनिसट्री और यूहन्ना की मिनिस्ट्री एक दूसरे को ढ़क रही है जरूर से । यूहन्ना फिर भी लगातार बपतिस्मा क्यों दे रहा है ? मुझे विश्वास है ऐसा इसलिए है कि परमेश्वर ने उसे उसका काम दिया है, और वह उसको तब तक करता रहेगा जब तक परमेश्वर उसे किसी और काम के लिए न बुला ले । थोडे समय पर उसकी नई बुलाहट प्रकट होगी - उसे हेरोद द्वारा बन्दी बना दिया जाएगा और वह शहीद हो जाएगा ।

परन्तु जब यूहन्ना के चेले उसके पास आते है तो वह नम्रता से कहता है, इस असर के साथ ''क्या किसी ने यीशु का जिक्र किया ? चालिए मैं आपको मसीहा के बारे में बताता हूँ ।''

यूहन्ना यहाँ पर अवसर नहीं खोता है और वह तुरन्त ही अपने पसंदीदा वि य पर बात करता है -

यूहन्ना दो बाते मसीह के बारे मे घोि त करता है ।

यीशु एक प्रत्यक्षदर्शी है

१. पहला यह है कि यीशु एक प्रत्यक्षदर्शी है । देखिए वचन इकतीस (३१) और बत्तीस (३२) जो ऊपर से आता है वह सर्वोत्तम है, जो पृथ्वी से आता है वह पृथ्वी का है, और पृथ्वी की ही बाते कहता है, जो स्वर्ग से आता है, वह सब के उपर है । जो कुछ उसने देखा और सुना है, उसी की गवाही देता है ...

आपको शायद याद हो, मेरी पिछले अध्ययन से, मैंने जो दिया था शब्द ''गवाह'' के उपर यूहन्ना के अध्याय एक (१) से । सात बार उस अध्याय में यूहन्ना ने सकेत किया गवाह बनने के लिए । क्या आपको याद है कि क्या आपको अच्छा गवाह बनाता है ? यह वह हो जो खडा होता है और बताता है जो उसने सुना । क्या है जो आदर्श गवाह बनाता है ? यह वह है जो खडा होता है और जो बताता है जो उसने देखा है । आँखो देखे गवाह का सबसे मजबूत केस होता कोर्ट में ।

और यूहन्ना वही पर है, एक अद्‌भुत, विश्वसयोग्य गवाह, पर यीशु मसीह की गवाही को उसका जोड़ नही है । यह ऐसा है ज सा श्रोताओं से एक अनुवादक के द्वारा बुलवाना और खुद उनसे बात करना उनकी भा ा के बीच में अंतर है । पिछे वचन बत्तीस में जाइए (३२) और देखिए तेतीस (३३) तक ।

जो कुछ उसने देखा और सुना है वह उसकी गवाही देता है, और कोई उसकी गवाही ग्रहण नहीं करता है । जिसने उसकी

गवाही ग्रहण कर ती उसने इस बात पर छाप लगा दी कि परमेश्वर सच्चा है ।

यूहन्ना ने इस बात को इस असर से कहा, ''मैं तुम्हें परमेश्वर के सत्य के विषय में बता सकता हूँ, और मैं तुम्हें स्वर्ग के राज्य के विषय में बता सकता हूँ, पर मैं कभी वहाँ नही गया और मैंने परमेश्वर को कभी नहीं देखा है ।''

जब आप यीशु को सुनते है बाते को बोलते

- आदम और हळा और अदन की बाटिका - वो वहाँ था ।

- नूह और जल प्रलय - उसने उसे होते देखा ।

- अब्राहम, यशायाह, दाऊद और दानिय्यल - उसने उन्हे देखा है ।

- भविष्य और चर्च का बनना - वह, जो हमारे समय सीमा में बधित नही है, उसने पहले ही इसकी शुरूआत देखी और फिर चर्च युग का पूरा होना भी ।

- स्वर्ग और उसके पिता का घर - वह वहाँ से अभी आया है ।

यीशु एक प्रायक्षदर्शी है ।।।

यीशु एक अधिकारी है

२. दूसरी बात जो यूहन्ना घोषित करता है यीशु के वि य मे, वह यह है वह एक अनन्त अधिकारी है । देखिए वचन चौतिस (३४) से छत्तीस (३६) तक । क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बाते कहता है, क्योंकि वह आत्मा नाप नापकर नही देता है । पिता पुत्र से प्रेम रखता है और उसने सब वस्तुँए उसके हाथ में दे दी है । जो पुत्र पर विश्वास करता है अनन्त जीवन उसका है परन्तु जो पुत्र को नहीं मानता, वह जीवन को नही देखेगा, परन्तु, परमेश्वर का क्रोध उसपर रहता है । यूहन्ना कहता है, ''अगर तुम्हें लगता है कि मेरा प्रचार मे अधिकार है, तो मैं तुम्हें अपने अधिकारी से मिलवाता हूँ । वह परमेश्वर का वचन बोलता है । वह अलौकिक त्रिएक को भाग है जो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा है । उसके पास अनन्त अधिकार है ।''

पर यूहन्ना बपतिस्मा का क्या है ? यीशु ने कहा की मनुष्य जाति में कोई भी यूहन्ना से महान नहीं हो सकता है । यहूदी इतिहासकर कहते है कि लगभग तीन लाख लोग (३,००,०००) इस मिनिस्ट्री को मानते थे । उसने इतनी उत्साह पैदा कर दिया था कि लोग उसे एलिय्याह का दुबारा प्रकट रूप कहने लगे थे ।

और अब यह तारा मुरझा रहा है । क्यों ? क्यों अब बेटा मनुष्य जाति के क्षितिज के उपर उजागर हो रहा है । अब परदे बन्द हो रहे है उदाहरण देने वाले बहादुर और नम्र व्यक्ति के पेशे के । और सबसे हँसी की बात यह है कि, उसे कोई भी दुख नहीं है ।

एक बार, जब जे हडसन् टेलर (J.Hudson Taylor) जो की चीन अग्रगामी प्रचारक थे, वह ऑस्ट्रेलिया दौरे पर थे, और उन्हें मेण्बार्न के बहुत ही बड़े चर्च में प्रचार करना था । वहाँ के पादरी ने हडसन् टेलर को बहुत सारे सर्वोत्तम शब्दों का प्रयोग करके परिचय करया, सबसे खासकर 'महान' शब्द का प्रयोग किया ? टेलर पुलपिट पर आते है और शांति से कहते है, ''मित्र मित्रों'', मैं एक छोटा सा सेवक हूँ, प्रख्यात मालिक का । हडसन् टेलर की तरह, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला भी एक व्यक्ति था जो दूसरे स्थान पर आने से खुश रहता था । और हम उसका सम्मान करते है जैसे मसीह ने उसका सम्मान किया । एक राज्य आने वाला है, जहाँ पर सम्मान का स्थान दिया जाएगा - उन्हें जिन्होंने दूसरे स्थान पर अच्छे से काम किया, जिन्होंने पूरे जोश के साथ सहारा देने वाले किरदार पूरा किया है, जिसने दूसरा पूरे खुशोभित के साथ पूरा किया है, जिसकी पहली इच्छा की भी अपने आप को सेवा कराने की नही रही, न ही अपने आप को स्पॉट लाईट में रखने की हुई, परन्तु स्पॉट लाईट का बिन्दु करे ''एक गवाह'' मेमना, राजाओं का राजा, परमेश्वर यीशु मसीह के ऊपर ।

मेरे को एक सेवक बना, नम्र और चुपचाप (शांत)

परमेश्वर मुझे उन्हें उठाने दे, जो कमजोर है ।

और हमेशा मेरे दिल की यही प्रार्थना रहे ,

मुझे सेवक बना, मुझे सेवक बना, मुझे सेवक बना आज ।